09-02-2023

ओपेक(OPEC)

समाचार पत्रों में क्यों?

पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (OPEC) महासचिव हैथम अल घैस ने भारत को तेल और गैस की खोज के लिए सबसे उपयुक्त जगह बताया है।

त्वरित मुद्दा?

- ग्लोबल मार्केट की स्थिरता के लिए पिछले साल अक्तूबर में सामूहिक तौर पर निर्यात कम करना सही कदम था। इससे वैश्विक बाजार को मजबूती मिली।
- ओपेक महासचिव ने कहा कि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की डिमांड बढ़ी है और अब हम हाईड्रोजन, बायोफ्यूल में निवेश कर रहे हैं। इस क्षेत्र में निवेश की काफी संभावना है। वैश्विक अर्थव्यवस्था का दायरा लगातार बढ़ रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन यानी ओपेक एक अंतर सरकारी इकाई है। इसकी स्थापना सितंबर 1960 में कुवैत, वेनेजुएला, ईरान और इराक द्वारा बगदाद सम्मेलन में की गई थी।
  - **मुख्यालय**: वियना, ऑस्ट्रिया में है।
- उद्देश्य; अपने सदस्य देशों की पेट्रोलियम नीतियों का समन्वय और एकीकरण करना तथा उपभोक्ता को पेट्रोलियम की कुशल, आर्थिक व नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये तेल बाजारों का स्थिरीकरण सुनिश्चित करना
- सदस्य; कुल 14 देश हैं - ईरान, इराक, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, अल्जीरिया, लीबिया, नाइजीरिया, गैबॉन, इक्वेटोरियल गिनी, कांगो गणराज्य, अंगोला, इक्वाडोर और वेनेजुएला 1
- पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन (ओपेक) की स्थापना उन तरीकों पर चर्चा करने के उद्देश्य से की गई थी जिसमें भाग लेने वाले देशों द्वारा उत्पादित कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि की जा सकती है।
- पश्चिमी शक्तियों के विरोध के बावजूद सऊदी अरब ने अन्य अरब और गैर अरब तेल उत्पादकों के साथ मिलकर इस समूह का गठन किया था। पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन की स्थापना 1960 में हुई

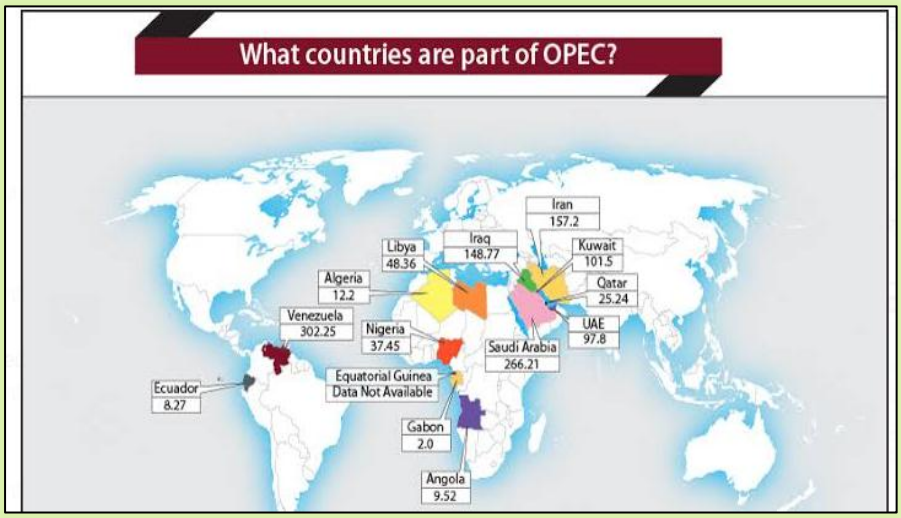

थी।

- एक बार संगठन की स्थापना के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, संयुक्त राष्ट्र के संकल्प संख्या 6363 (United Nations Resolution No. 6363) के बाद इसे 1962 में संयुक्त राष्ट्र सचिवालय के साथ पंजीकृत किया गया था।
- इसके गठन के प्रारंभिक वर्षों में, ओपेक का मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में स्थित था। बाद में इसे 1 सितंबर, 1965 को वियना, ऑस्ट्रिया स्थानांतरित कर दिया गया।
- पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन के संस्थापक सदस्य इस प्रकार हैं:
  - ईरान
  - इराक
  - कुवैट
  - सऊदी अरब
  - वेनेजुएला
- सदस्य बनने के लिए देश के पास महत्वपूर्ण कच्चा पेट्रोलियम निर्यात होना चाहिए और सदस्यता केवल तीन चौथाई सदस्यों द्वारा नए सदस्यों के प्रवेश के पक्ष में वोट देने के बाद दी जाती है। विशेष परिस्थितियों में देशों को सहयोगी सदस्यता भी प्रदान की जाती है।
- ओपेक सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिनिधिमंडल शामिल होते हैं। सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल में एक या अधिक प्रतिनिधि शामिल हो सकते हैं, साथ ही सलाहकार भी हो सकते हैं।
- बोर्ड ऑफ गवर्नर;-यह ओपेक के सदस्य देशों (OPEC member countries in Hindi) द्वारा नामित गवर्नर से बना है। संगठन के प्रत्येक सदस्य देश गवर्नर बोर्ड की सभी बैठकों में हिस्सा लेते हैं। हालांकि, बैठक आयोजित करने के लिए दो-तिहाई सदस्यों का होना जरूरी होता है।

अन्य प्रमुख तथ्य?

ओपेक प्लस क्या है?

- यह ओपेक सदस्यों और विश्व के 10 प्रमुख गैर-ओपेक तेल निर्यातक देशों का गठबंधन हैं।
- अजरबैजान, बहरीन, ब्रुनेई, कजाखस्तान, मलेशिया, मैक्सिको, ओमान, रूस, दक्षिण सूडान और सूडान |

फॉलो ऑन पब्लिक ऑफर

समाचार पत्रों में क्यों?

अडानी एंटरप्राइजेज की ओर से 20,000 करोड़ रुपये का एफपीओ वापस ले लिया गया है।

त्वरित मुद्दा?

- गौतम अडानी ने कहा कि मेरे लिए मेरे निवेशकों का हित सर्वोपरि है। इसलिए निवेशकों को संभावित नुकसान से बचाने के लिए हमने एफपीओ वापस ले लिया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- एफपीओ यानी फॉलो ऑन पब्लिक ऑफर (Follow on Public Offer), शेयर बाजार में लिस्टिड किसी कंपनी की ओर

से पेश किया जाता है। इसके तहत कंपनी पूंजी जुटाने के लिए नए शेयर अपने मौजूदा शेयरधारकों और नए शेयरधारकों को जारी करती है।

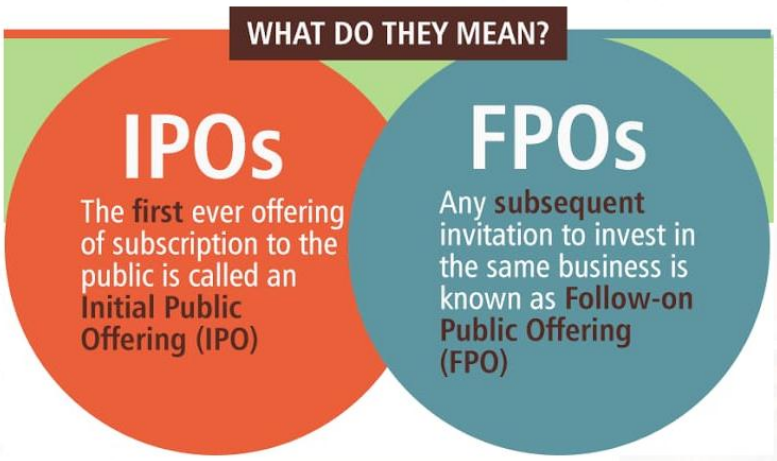

- यह अतिरिक्त इक्विटी पूंजी जुटाने का एक साधन है जो कंपनी की अपने परिचालन को चलाने या उनकी विस्तार योजनाओं को निष्पादित करने की आवश्यकता को पूरा करता है।
- एफपीओ किसी लिस्टिड पब्लिक कंपनी की ओर से तभी जारी किया जाता है, जब उसे अपनी भविष्य की योजनाओं को पूरा करने के लिए पैसे की आवश्यकता होती है।
- कई बार अपने कर्ज को कम करने के लिए और बाजार में शेयर की लिक्विडिटी बढ़ाने के लिए कंपनियां इसका इस्तेमाल करती हैं। इसमें कोई भी आम निवेशक किसी भी ब्रोकिंग प्लेटफॉर्म पर जाकर बोली लगा सकता है।
- आईपीओ में, कंपनी अपनी प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश से पहले सूचीबद्ध नहीं है। यह इसे एक अपेक्षाकृत उच्च जोखिम निवेश बनाता है क्योंकि संभावित निवेशक के पास निवेश करने से पहले विश्लेषण करने के लिए कंपनी का कोई भी ट्रैक रिकॉर्ड नहीं होता।
- दूसरी ओर, एक एफपीओ की पेशकश की जाती है जब कंपनी पहले से ही सूचीबद्ध होती है। इससे निवेशकों को बाजार के रुझानों को देखने और निर्णय लेने से पहले कुछ समय के लिए अपने संभावित निवेश को ट्रैक करने की अनुमति मिलती है।
- जबकि आईपीओ का उपयोग निजी कंपनियों द्वारा निधि विस्तार के लिए किया जाता है, बहुत सी सरकारी संस्थाएं अपने ऋण या हानि को पूरा करने या कंपनी में अपनी हिस्सेदारी को कम करने के लिए एफपीओ का उपयोग करती हैं।

अन्य प्रमुख तथ्य?

एफपीओ दो प्रकार के होते हैं।

- पहला मिश्रित एफपीओ (Dilutive FPO): मिश्रित एफपीओ में कंपनी की ओर से अतिरिक्त शेयर जारी जाते हैं। - इससे कंपनी की ईपीएस पर प्रभाव होता है।
- दूसरा गैर-मिश्रण एफपीओ (Non-Dilutive FPO) : गैर-मिश्रण एफपीओ में निजी कंपनियों की ओर से गैर-लिस्टिड शेयरों को बेचा जाता है। इससे ईपीएस प्रभावित नहीं होता है।

सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में 03 फरवरी, 2023 से 36वें अंतर्राष्ट्रीय सूरजकुंड मेले की शुरुआत हो गई है, जो 19 फरवरी तक चलेगा।

त्वरित मुद्दा?

- इस वर्ष आठ पूर्वोत्तर राज्य मेले के थीम राज्य हैं। एनईआरएएमएसी और उत्तर एनईएचएचडीसी नोडल एजेंसियां हैं जो पूर्वोत्तर क्षेत्र थीम राज्य पवेलियन की स्थापना कर रही हैं। मंडप में एक स्थायी संरचना शामिल होगी जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी राज्यों के तत्व, फैशन शो, रंगारंग कार्यक्रम, कारीगरों के स्टॉल, सांस्कृतिक कार्यक्रम के अतिरिक्त पूर्वोत्तर क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति को प्रदर्शित करने वाली कई अन्य गतिविधियां और क्षेत्र में प्रगति तथा विकास पर प्रकाश डालने वाले कार्यक्रम शामिल हैं

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- प्रत्येक फरवरी के पहले पखवाड़े के दौरान फरीदाबाद, हरियाणा के सूरजकुंड में रंगों की बौछार, ढोल की थाप की लय और आनंद का मिलन होता है।
- मेले का आयोजन सूरजकुंड मेला प्राधिकरण और हरियाणा पर्यटन द्वारा पर्यटन, कपड़ा, संस्कृति और विदेश मामलों के केंद्रीय मंत्रालयों के सहयोग से किया जाता है।

- इस बार मेले की थीम नॉर्थ ईस्ट रीजन की 8 स्टेट पर है और पार्टनर कंट्रीज के तौर पर शंघाई को-ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (SCO) के राष्ट्र हैं।
- मेले में कम से कम 20 देश और भारत के सभी राज्य भाग लेंगे।
- यह मेला 1987 में शिल्पकारों और उनके अद्भुत कामों को प्रदर्शित करने के लिए शुरू किया गया था।
- इसका मुख्य उद्देश्य लोकल आर्ट को बढ़ावा देना और रोजगार के अवसर प्रदान करना था। इस मेले में कपड़ा, चीनी मिट्टी के बर्तन और टेराकोटा आदि मिलता है।
- इस मेले को वर्ष 2013 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मेले रूप में अपग्रेड किया गया था।
- सूरजकुंड मेला भारत के हस्तशिल्प, हथकरघा और सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि एवं विविधता को प्रदर्शित करता है, इसके साथ ही यह विश्व का सबसे बड़ा शिल्प मेला है।

INS विक्रांत

समाचार पत्रों में क्यों?

भारतीय नौसेना ने स्वदेश निर्मित लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस को विमान वाहक युद्धपोत INS विक्रांत पर सफलता पूर्वक लैंड करवाया।

त्वरित मुद्दा?

- हिंद-प्रशांत महासागर क्षेत्र में बड़ी सामरिक-रणनीतिक भूमिका का आधार तैयार कर रही भारतीय नौसेना ने सोमवार को स्वदेश निर्मित लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए-नेवी) को विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर सफलतापूर्वक उतार कर एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। विमान वाहक पोत पर स्वदेशी एलसीए की सफल लैंडिंग नौसेना की सामरिक क्षमता के लिहाज से मील का पत्थर से कम नहीं है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- 'विक्रांत' का अर्थ है- साहसी (Courageous) इसे जिसे यू.के. से खरीदा गया था और वर्ष 1961 में कमीशन किया गया था और 31 जनवरी 1997 को नेवी से INS विक्रांत को रिटायर कर दिया गया था।

- ये भारत का पहला स्वेदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर है, जो कि भारत में बना सबसे बड़ा युद्धपोत है। इसमें 30 एयरक्राफ्ट रखने की क्षमता है। 15 डेक, मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल, पूल। वहीं इसमें महिला अवसरों के लिए स्पेशल केबिन खुलवाया गया है।
- INS विक्रांत की कीमत 20000 करोड़ है। इसका वजन 40,000 टन है। इसकी लंबाई 262 मीटर है। वहीं इसकी चौड़ाई 62 मीटर है।
- INS विक्रांत की कुल केबल बिछाने की लंबाई 2400 किमी है जो कोच्चि और दिल्ली के बीच की दूरी के बराबर है। विमानवाहक पोत के 2,300 डिब्बों में 1,700 नाविकों के लिए जगह है।

- इस पर 30 फाइटर जेट्स तैनाए किए गए हैं. इनमें MIG- 29K, Kamov-31 और MH-60R मल्टी-रोल हेलिकॉप्टर शामिल हैं। फिलहाल विक्रांत पर मिग-29के ('ब्लैक पैंथर') फाइटर जेट तैनात होंगे और उसके बाद डीआरडीओ और एचएएल द्वारा तैयार किया जा रहा टीईडीबीएफ यानी टूइन इंजन डेक बेस्ड फाइटर जेट होगा।
- तेजस एलमुनियम, लिथियम एलोय, कार्बन फाइबर कंपोजिट, टाइटेनियम एलाय और स्टील से बनाया गया है। इस वजह से तेजस दूसरे लड़ाकू विमानों की तुलना में बहुत हल्का है।
- तेजस का वजन केवल 65 क्विंटल है। तेजस के हल्का होने के बाद भी इसकी ताकत अपनी पीढ़ी के दूसरे विमानों से कम नहीं है।
- तेजस की सबसे बड़ी खूबी है कि इसके 50 फीसद से अधिक कंपोनेंट भारत में ही बने हैं।
- फरवरी 2019 में तेजस को एयरफोर्स में शामिल किया गया था। तेजस हल्के वजन में बहुत कारगर लड़ाकू विमान है क्योंकि वह 1.6 मैक की स्पीड से उड़ान भरता है।
- सुखोई विमान की तरह तेजस कई तरह के हथियार और मिसाइल ले जा सकता है। तेज हवा में भी ईंधन रिफिल कर तेजस फिर से दुश्मन के इलाके में जा सकता है।
- तेजस दुर्गम इलाकों में भी आसानी से लैंड कर सकता है और रडार से बचने में महारत हासिल है।
- हवा से हवा और हवा से जमीन दोनों मामलों में हमला करने में तेजस कारगर है एवं हर तरह के मौसम में काम करने में पूरी तरह से सक्षम है।

तुर्की और सीरिया में भूकंप से तबाही

समाचार पत्रों में क्यों?

तुर्की और सीरिया में सोमवार को आया भूकंप (Turkey and Syria Earthquake) सबसे खतरनाक साबित हुआ है। इस भूकंप में अब तक करीब 15000 लोगों की मौत हो चुकी है। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में यह आकड़ा बढ़ सकता है। यह भूकंप तुर्की और सीरिया के बॉर्डर पर आया था और इसने दोनों तरफ जमकर तबाही मचाई।

त्वरित मुद्दा?

- सोमवार छह फरवरी को तुर्की और सीरिया के बॉर्डर पर आया भूकंप सबसे ज्यादा भयंकर साबित हुआ। इस भूकंप में अब तक 15000 से भी ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। कई लोग मलबे में अभी तक दबे हुए हैं और ऐसे में माना जा

रहा है कि यह आंकड़ा बढ़ सकता है। इस भूकंप का केंद्र तुर्की का गजियानटेप प्रांत का नूरदागी था। यह जगह सीरिया और तुर्की के बॉर्डर पर है। साल 2015 में नेपाल आए भूकंप के बाद इसे सबसे भयावह भूकंप करार दिया जा रहा है। नेपाल भूकंप में करीब नौ हजार लोगों की मौत हो गई थी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- तुर्की के गाजियानटेप के पास भूकंप की तीव्रता 7.8 थी। आधिकारिक पैमाने पर इसे बहुत विनाशकारी श्रेणी में रखा जाता है।
- इसका केंद्र अपेक्षाकृत उथला, करीब 18 किलोमीटर नीचे था, जिसकी वजह से जमीन पर खड़ी इमारतों को गंभीर नुकसान पहुंचा।
- यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के अनुसार, किसी भी साल में आए विनाशकारी भूकंपों को अगर देखा जाए तो पिछले दस सालों में इस तीव्रता के सिर्फ दो और उससे पहले के दशक में चार भूकंप दर्ज किए गए हैं।
- दक्षिण तुर्की और खासकर सीरिया में रिहाईशी ढांचे दुर्भाग्य से दूर दूर हैं, इसलिए लोगों की जान बचाने के लिए मुख्य रूप से राहत और बचाव पर अधिक निर्भरता रहती है। जिंदा लोगों को बचाने के लिहाज से अगले 24 घंटे बहुत महत्वपूर्ण हैं। 48 घंटे बाद जिंदा बचे लोगों की संभावना बहुत कम हो जाती है। इससे मृतकों की संख्या बढ़ेगी।
- जानकारों का कहना है कि ये ऐसा इलाका है जहां पिछले 200 साल से कोई बड़ा भूकंप या ऐसा कोई खतरनाक संकेत नहीं आया था। इसलिए यहां उन इलाकों के मुकाबले कम तैयारी थी, जहां भूकंप के झटके आते रहते हैं।
- पृथ्वी की सबसे बाहरी परत सात बड़े टुकड़ों से बनी है, जिन्हें टेक्टोनिक प्लेट्स (tectonic plates) के नाम से जाना जाता है। इन प्लेटों की सीमाएं fault lines हैं।
- पृथ्वी की सतह में एक लंबी दरार है। भूकंप आमतौर पर फॉल्ट लाइन के बीच किसी भी तरह की हलचल से आता है। जब प्लेट टकराती हैं, तो घर्षण की वजह से ऊर्जा बाहर निकलने की कोशिश करती है। इससे जो हलचल होती है उसी की वजह से भूकंप आता है।
- तुर्की चार टेक्टोनिक प्लेटों के जंक्शन पर बसा देश है। इसका सबसे बड़ा हिस्सा एनाटोलियन प्लेट पर बसा है, जो दो प्रमुख प्लेटों, यूरेशियन और अफ्रीकी और एक छोटी, अरेबियन के बीच स्थित है। अफ्रीकी और अरब प्लेटें जैसे ही शिफ्ट होती हैं, पूरा तुर्किये जोर से कांपने लगता है।
- तुर्की आपदा और आपातकालीन प्रबंधन प्राधिकरण (एएफएडी) के आंकड़ों के अनुसार अकेले साल 2020 में 33,000 से अधिक भूकंप की घटनाएं यहां देखने को मिली, जिनमें से 322 की तीव्रता 4.0 से भी अधिक थी।